SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st year SESSION – 2021-2023

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – संज्ञानवाद

DATE - 22/01/2022

संज्ञानवाद

(Cognitivist)

मनोविज्ञान की विभिन्न विचारधाराओं में ~~संज्ञानवाद~~ संज्ञानात्मक विचारधारा का भी विशेष महत्व है। इस विचारधारा की मूल मान्यता यही है कि उद्दीपक के प्रस्तुत होने तथा उसके प्रति व्यवहार प्रदर्शित होने के बीच में रूपान्तरण की अनेकानेक घटनाएँ मस्तिष्क में घटती हैं और इस कारण अनुक्रिया का प्रदर्शन सम्भव होता है तथा उसका स्वरूप निर्धारित होता है।

संज्ञान :- मनोवैज्ञानिक अवधारणा के अनुसार संज्ञान वह मानसिक क्रिया या प्रक्रिया है, जिसके द्वारा ज्ञानार्जन होता है, जिसमें ज्ञान या जानकारी, प्रत्यक्षीकरण और तर्क सम्मिलित होते हैं। संज्ञान शब्द का प्रयोग अक्सर अधिगम और चिन्तन को व्याख्यायित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है

संज्ञान (cognition) कॉगनिशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कॉगनोसियर (cognoscere) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'जानना या ज्ञान'

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार :- "विचार, अनुभव और इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने और अवबोध की मानसिक क्रिया या प्रक्रियायें।

वेबस्टर शब्दकोष के अनुसार :
" जानकारी ज्ञान और प्रत्यक्षीकरण की क्रिया संज्ञान है।"

जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास

जीवन परिचय : जन्म 9 August 1896
मृत्यु 16 sept 1980
गुरु अल्फ्रेड बिने

* संज्ञानात्मक विकास का अर्थ :- संज्ञानात्मक विकास का तात्पर्य ~~बाल~~ बालकों में किसी संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके ~~उस~~ उसपर चिंतन करने तथा क्रमिक रूप से उसे उस लायक बना देने से होता है। जिसका प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में करके वे तरह - तरह की समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकते हैं।

संज्ञानात्मक विकास के अध्ययन के क्षेत्र में जीन पियाजे का सिद्धांत अभूतपूर्व माना गया है। इन्होंने बालकों के चिंतन एवं तर्कणा के विकास के जैविक तथा संरचनात्मक तत्वों पर बल डालकर संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या की है। व्याख्या के पहले इस सिद्धांत के कुछ महत्वपूर्ण सम्प्रत्ययों की व्याख्या करना उचित है जो निम्नलिखित हैं :-

1. संगठन (organization) — संगठन से तात्पर्य प्रत्यक्षीकृत तथा बौद्धिक सूचनाओं के सार्थक स्वरूप की व्यवस्थित करने से होता है। वस्तुतः प्रत्येक वस्तु अपनी स्वयं की बौद्धिक संरचनाओं का निर्माण करता है जो वातावरण के साथ समायोजन करने में उसके ज्ञान तथा कार्यों को संगठित करती है।

2. अनुकूलन (Adaptation) :— पियाजे के अनुसार बालकों में वातावरण के साथ सामन्जस्य करने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है, जिसे अनुकूलन कहा जाता है।

अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने पूर्वज्ञान तथा नवीन अनुभवों के मध्य संतुलन स्थापित करता है। पियाजे ने अनुकूलन की दो उपप्रक्रियायें बताई हैं।

(i) आत्मसातकरण (Assimilation) :— आत्मसातकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे बालक समस्या के समाधान के लिए पूर्व सीखी गई मानसिक प्रक्रियाओं का सहारा लेता है।

(ii) समायोजन (समविक्षीकरण) (Accomodation) :— जब बालक पहले से ज्ञात बातों में कोई नवीन बात जोड़ता है अथवा अंतर करना सीखता है तो उसे समविक्षीकरण की प्रक्रिया कहेंगे।

3. स्कीम्स (schemes) — व्यवहारों के संगठित रूप को जिसे आसानी से दोहराया जा सकता है उसे स्कीम्स कहा जाता है।

(4) स्कीमा (Schema) :- स्कीमा से तात्पर्य ऐसी मानसिक संरचना से है जो व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क में सूचनाओं को संगठित तथा व्याख्या करने हेतु विद्यमान होती है।

(5) संज्ञानात्मक संरचना (Cognitive Structures) - किसी भी बालक के मानसिक संगठन या मानसिक क्षमताओं के समूह को संज्ञानात्मक संरचना कहते हैं। जैसे - एक 4 साल के बालक को 8 साल के बालक से भिन्न समझा जाता है।

(6) मानसिक संक्रिया (mental operations) :- बालक द्वारा किसी समस्या के समाधान पर चिंतन करना ही मानसिक संक्रिया करने को समझा जाता है।

(7) विकेंद्रीकरण (Decentering) :- विकेंद्रीकरण से तात्पर्य किसी वस्तु या चीज़ के बारे में वस्तुनिष्ठ या वास्तविक ढंग से सोचने की क्षमता से होता है।

(2 वर्ष के बालकों में वास्तविक ढंग से सोचने की क्षमता विकसित होने लगती है।)

(8) साम्यधारण (Equilibration) :- साम्यधारण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक आत्मसातकरण तथा समायोजन की प्रक्रियाओं के बीच एक संतुलन कायम करता है।

* जीन पियाजे (Jean piaget) के द्वारा बौद्धिक विकास की निम्न चार अवस्थाएँ बतायी गई है :-

1. संवेदी - पेशीय अवस्था - (sensory motor stage) — (ज्ञानेन्द्रिया गामक अवस्था)

(जन्म से 2 वर्ष तक)

ज्ञानात्मक विकास की प्रथम अवस्था को पियाजे ने संवेगात्मक - गामक अवस्था के नाम से संबोधित किया है यह अवस्था जन्म के उपरान्त 2 वर्षों तक चलती है। इस अवस्था में बालक देखने, पकड़ने, पहुँचने, चूसने आदि की स्वतः सहज क्रियाओं से व्यवस्थित प्रयासरत क्रियाओं की ओर अग्रसित होता है। कालान्तर में वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इनका इच्छानुसार ढंग से प्रयोग करना सीख जाता है।

बालक प्रयास व त्रुटि के आधार पर अपनी परिस्थितियों को समझने का प्रयास करते है। लगभग 1½ ~~वर्ष~~ वर्ष की आयु में बालक कुछ करने से पहले सोचना प्रारम्भ कर देते है।

2. पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था :- (preoperational stage)

(2 से 7 वर्ष)

संज्ञानात्मक विकास की यह अवस्था 2 से 7 वर्ष की होती है, यह प्रारम्भिक बाल्यावस्था होती है। इस अवस्था को पियाजे ने 2 भागों में बाँटा है।

(i) पूर्व - प्रत्यात्मक काल (pre - conceptual stage) — 2 से 4 वर्ष तक

इस अवस्था में बालक सूचकता (signifiers) विकसित कर लेते है। सूचकता से तात्पर्य इस बात से होता है कि बालक यह समझने लगता है कि वस्तु, प्रतिमा तथा चिन्तन किसी चीज के लिए किया जाता है

(ii) ओत - प्रोतकाल या अन्तर्दर्शी अवधि - 4 से 7 वर्ष (Intuitive stage)

इस अवस्था में बालक बिना किसी तार्किक विचार प्रक्रिया के किसी वस्तु या बात को मस्तिष्क के द्वारा तुरंत ग्रहण कर लेने से है। इस अवस्था में बालक विभिन्न घटनाओं या कार्यों के संबंध में क्यों तथा कैसे (Why and How) जैसे प्रश्नों का उत्तर जानने में रुचि रखते है। वे जिस भी कार्य को किसी के द्वारा करते देखते है तो उसी कार्य को करने लगते है। उनमें बड़ों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति होती है। इस अवस्था में 2 वर्ष का बालक लगभग 200 शब्दों को समझ लेता है जबकि 6 वर्ष का बालक लगभग 16000 शब्दों को समझ लेता है।

3 मूर्त - संक्रिया अवस्था / ठोस संक्रिया अवस्था — (Stage of concrete operation)

(7 - 11 वर्ष) मूर्त संक्रिया अवस्था लगभग सात वर्ष से 12 वर्ष की आयु तक चलती है इस अवस्था में बालक छोटे - छोटे रिवर्सीबल (Reversible) पदों की श्रृंखला के द्वारा विचार करने लगता है

अब वे माप सकते है, तौल सकते है तथा गिन सकते है। अब सूचनायें मूर्त होती है, तब वे ठीक ढंग से उनकी तुलना भी कर सकते है। इस अवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित है-

i) मूर्त वस्तुओं का तार्किक चिंतन में बालक समर्थ होता है

ii) बालक आत्म-केंद्रीकरण छोड देता है और दूसरे के दृष्टिकोणों को समझने लगता है। उनकी वाणी अधिक से अधिक समाजीकृत और आदान-प्रदान करने के लिए तैयार होती है।

iii) सुरक्षा की समझ बालक मूर्त क्रियात्मक असंरचना लम्बाई क्षेत्रफल और अंत में घनत्व का संरक्षण समझने लगता है।

iv) बालक वस्तुओं को वर्गीकृत करने समूह बनाने और उन्हे क्रमिक रूप से व्यवस्थित करने की क्षमता वह वास्तविक वस्तुओं के समूह के बीच संबंध को समझने में समर्थ हो जाता है। वह वस्तु और वातावरण में परिवर्तन को भी समझा सकता है।

4. औपचारिक क्रियात्मक अवस्था :- (11 से 15 वर्ष)

जीन पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अंतिम अवस्था औपचारिक संक्रिया अवस्था है जो लगभग 11 से 15 वर्ष की आयु तक चलती है इस अवस्था के दौरान व्यक्ति अपने खुद के निकटतम

निकटतम संसार से परे सोचने और तर्क करने की योग्यता प्राप्त कर लेता है। वह विभिन्न समस्याओं का समाधान योजनाबद्ध और तार्किक ढंग से करता है इस अवस्था की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(i) <u>उच्च-स्तरीय संतुलन</u> :- बालक किसी समस्या का समाधान करने को बहुत सारी सम्भावनाओं की कल्पना कर सकता है। वह अमूर्त और प्रकल्पना पर आधारित समस्याओं से निपट सकता है।

(ii) इस अवस्था में व्यौम समस्याओं पर तार्किक चिंतन का प्रयोग करने में समर्थ होता है चाहे समस्या मूर्त हो या प्रकल्पना पर आधारित

(iii) इस अवस्था में व्यौम समस्याओं का समाधान करने के लिए अमूर्त नियमों का प्रयोग करने में समर्थ होता है।

(iv) औपचारिक क्रियाओं के विकास से किशोर को एक स्थिति से दूसरी स्थिति में सहायता मिलती है।

* जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत का शिक्षा में महत्व और योगदान :- *

1. जीन पियाजे की व्यवहारिक व्याख्या :- पियाजे ने बुद्धि की परिभाषा और व्याख्या व्यवहारिक ढंग से की है। व्यौम की बुद्धि परिवर्तनशील कार्य प्रणाली है। इसके कुछ कार्य है और इन कार्यों से हमें व्यौम की बुद्धि को मापने में सहायता मिलती है।

(2.) चालकों और अभिप्रेरणा का महत्व :—

इसमें संतुलीकरण को जीव और पर्यावरण के बीच संतुलन की ओर निरंतर बालक के रूप में परिभाषित करके इसके प्रयोजन के लिए संतुलन की धारणा का प्रयोग किया गया है।

(3.) पाठ्यक्रम नियोजन :—

पियाजे के सिद्धान्त में बच्चो के ज्ञानात्मक विकास और समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अधिगम अनुभवों की एक उपयुक्त रूप रेखा प्रदान की गई है जो पाठ्यक्रम नियोजन और अध्ययन की योजना को संचालित करती है।

(4.) चिंतन प्रक्रिया से परिचय :— पियाजे के सिद्धांत में अध्यापकों और अभिभावकों को बच्चों की परिपक्वता आयु के एक निश्चित स्तर पर उनकी चिंतन प्रक्रिया से परिचित कराया जाता है।

(5.) बाल-केन्द्रित शिक्षा — पियाजे के सिद्धांत में बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया गया है। इसमें बालक को शिक्षा का ज्ञानात्मक संरचना की कार्य प्रणाली के स्तर के अनुकूलन बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

(6.) अधिगम के लिए अनुकूलन परिस्थितियाँ —

इस सिद्धांत में (1) आत्मीकरण (2) समायोजन और (3) संतुलीकरण की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए बच्चे के अधिगम और विकास के लिए

(10)

अनुकूलतम परिस्थितियों के संगठन पर बल दिया
जाता है।